एकेडेमॉस 2014

विद्या एवम् कौशल से परिपूर्ण
विभिन्न विषयों से सम्बद्ध एक वार्षिक संग्रह

स्वर्ण जयंती वर्ष
1964–2014

कमला नेहरू कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

लेखानुक्रमणिका

	प्राचार्या की ओर से...	5
	सम्पादकीय	6
	कृतज्ञता ज्ञापन	7
1.	हिंदी समीक्षा : भ्रांत धारणाएं **डॉ. नरेन्द्र कोहली**	9
2.	भारतीय हिंदी समाज और स्त्री लेखन **श्रीमती चित्रा मुद्गल**	15
3.	कविगुरु रवीन्द्र और निराला की रचना दृष्टि **डॉ. विभा गुप्ता**	23
4.	वेदकालीन भारतीय स्त्री **डॉ. मंजु गुप्ता**	33
5.	समकालीन कविता और कुँवरनारायण **डा. कविता भाटिया**	41
6.	पश्चिमी सभ्यता का भारतीय विकल्प **डॉ. रसाल सिंह**	64
7.	स्त्री-विमर्श और हिन्दी साहित्य का अध्यापन **डॉ. अर्चना वर्मा**	73
8.	रामधारी सिंह कृत 'रश्मिरथी'; आधुनिक समसामयिक संदर्भों में एक पुनर्दृष्टि **डॉ. तृप्ता शर्मा**	81
9.	प्रकृति संदर्भों में प्रछन्न राजनीतिक चेतना **श्रीमती निशा नाग**	91
10.	महादेवी की दृष्टि में निराला : स्नेह की झाँकी **श्रीमती सरोज सक्सेना**	98

11. ओमप्रकाश वाल्मिकि की रचनाओं में स्त्री संवेदना 103
डॉ. रजत रानी 'मीनू'

12. हिरण्यगर्भ सूक्त में सृष्टि की स्थिति 114
डॉ. सुषमा चौधरी

13. समकालीन समाज और उदयप्रकाश की कविता 119
डॉ. भारती

14. हिन्दू संस्कार 127
डॉ. कमलेश रानी

15. प्रेमचंद और अज्ञेय के उपन्यासों में प्रकृति सौंदर्य और युगीन संवेदनाएं 140
डॉ. रीता सिन्हा

16. झीनी-झीनी बीनी चदरिया का सामाजिक संदर्भ; एक पुनर्विचार 149
डॉ. राजेश चंद 'आदर्श'

17. मन्नू भण्डारी की कहानियों में स्त्री जीवन 156
डॉ. सुषमा सहरावत

18. प्रेमचंद की कहानियों में नारी 163
श्रीमती कांति मीणा

19. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश और नई कहानी में उभरता जन-सामान्य 172
डॉ. अनुराधा गुप्ता

20. दरिया साहब और दरिया पंथ का सामाजिक महत्त्व 179
डॉ. सुधा निकेतन रंजनी

21. ग्रामीण दलित अस्मिता पर टी.वी. का प्रभाव 183
श्री गोपाल लाल मीणा

22. स्थूलता : एक संक्रमण 199
डॉ. सरयू रूहेला

23. नाटकों में संगीत की महत्ता 204
डॉ. गुंजन कुमार झा

24. रचनाकारों के संक्षिप्त परिचय 214

सांची स्तूप के एक द्वार का दृश्य। निर्माण का वह भाग जिस पर हमारा 'लोगो' (Logo) निर्धारित है, सबसे ऊपर दृश्यमान है।

प्राचार्या की ओर से...

'एकेडेमॉस' द्वारा हिन्दी भाषा को एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला, ये मेरे लिए गर्व की बात है। इंग्लिश यदि टेक्नोलॉजी की भाषा मानी जाती है तो हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करना तथा उसे कार्यालयी भाषा (official language) के रूप में मान्यता प्रदान करवाना आवश्यक है। मुझे लगता है कि अपनी भाषा में हम दूसरों की समस्याओं, उनकी स्थितियों को अच्छी तरह समझ सकते हैं। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो देश के हर कोने के लोगों को दूसरे कोने तक जोड़ती है। इसीलिए हिन्दी हमारी 'सम्पर्क भाषा' भी है। हमारी सभ्यता और संस्कृति में अनेक महत्त्वपूर्ण लेखक और रचनाकार हुए हैं। हम मात्र अनुवाद के सहारे उनकी रचनात्मक गहराइयों तक नहीं पहुँच सकते। यदि हमें हिन्दी भाषा का ज्ञान होगा तो हम हिन्दी की रचनाओं को अधिक बेहतरीन ढंग से समझ सकेंगे। मेरा ऐसा मानना है कि अंग्रेजी से हिन्दी में तो अनुवाद सफल हो सकते हैं किंतु हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करने से उसका रस नष्ट हो जाता है। वैसे भी, किसी भी भाषा की रचनाओं को हम उसी भाषा की शब्दावली में अधिक ठीक ढंग से जान-समझ सकते हैं।

मैं 'एकेडेमॉस' की सम्पादक मण्डल का अभिनन्दन करती हूँ कि उन्होंने अपने अथक प्रयासों से 'एकेडेमॉस' को एक अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। आज 'एकेडेमॉस' सभी पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों के office से तक पहुँचता है। अपने रजिस्ट्रेशन के माध्यम से यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गया है और इसमें प्रकाशित लेख उच्चस्तरीय माने जाते हैं। कमला नेहरू कॉलेज की स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर 'एकेडेमॉस' के इस विशेष अंक के प्रकाशन पर मैं 'एकेडेमॉस' टीम को बधाई देती हूँ।

Minati Chatterjee

डॉ. मिनौती चैटर्जी

प्राचार्या

सम्पादकीय

"विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरूचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

– आचार्य भर्तृहरि

अर्थात् विपत्ति में धैर्य रखना, उन्नतिशील स्थिति में भी क्षमाभाव रखना, सभा में वाणी कौशल, युद्ध में पराक्रम, यश प्राप्ति में इच्छाशील होना तथा वेदाध्ययन में रुचि रखना – ये सब बातें महात्माओं में स्वभाव से पाई जाती हैं। अतः अन्य लोगों को भी इन गुणों का आचरण करना चाहिए।

एकेडेमॉस 2014 का प्रस्तुत अंक दो अर्थों में विशेष महत्त्व रखता है। पहला, यह वर्ष कमला नेहरू कॉलेज का स्वर्ण जयंती वर्ष है। 20 जुलाई, 1964 के दिन कमला नेहरू कॉलेज की स्थापना 'गवर्मेंट कॉलेज फॉर वूमेन' के नाम से डिफेंस कॉलोनी में हुई थी। 21 नवम्बर 1972 को अगस्त क्रांति मार्ग पर इस कॉलेज की नई इमारत की आधारशिला रखी गई थी और सन् 1974 में इसे कमला नेहरू कॉलेज का नाम दिया गया। दूसरा, स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में कॉलेज से इतर अन्य प्रबुद्धजनों के लेख भी प्रकाशन हेतु आमंत्रित किए गए।

'एकेडेमॉस' का सफर 2006 में आरम्भ हुआ था और इसका श्रेय जाता है हमारी प्राचार्या डॉ. मिनौती चैटर्जी को जिन्होंने 'एकेडेमॉस' जर्नल शुरू कर शिक्षकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु कॉलेज में ही एक दृढ़ मंच प्रदान किया। मैं इसे अपना सौभाग्य समझती हूँ कि प्राचार्या महोदया ने 'एकेडेमॉस' (हिन्दी अनुभाग) का सम्पादन कार्य मुझे सौंपा। सन् 2008 तक डॉ. मालविका मजूमदार (पूर्व सम्पादक, एकेडेमॉस, इंग्लिश) के दिशानिर्देशन में इसका सहसम्पादन करते हुए मैंने बहुत कुछ उनसे सीखा व समझा। तत्पश्चात् सन् 2009 से इसके सम्पादन का कार्य मुझे मिला। तब से लेकर आज तक 'एकेडेमॉस' ने अपना सुखद सफर आप सभी विद्वज्जनों के सहयोग से सफलतापूर्वक तय किया है। आगे भी यह सफर लगातार उन्नतशील होकर अग्रसर होता रहे – ऐसी कामना है।

'एकेडेमॉस' के 'विशेषांक' में हमारा प्रयास रहा है कि अधिकाधिक विषय-वैविध्य रखते हुए पाठक समुदाय को ज्ञानवर्द्धक एवं लाभप्रद सामग्री उपलब्ध हो सके। अतः अत्यंत विनम्र भाव के साथ कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए 'एकेडेमॉस' का यह आठवां अंक समस्त सहृदय पाठक वृन्द को अत्यंत उल्लसित मन के साथ प्रसन्नतापूर्वक समर्पित है।

– डॉ. सुषमा सहरावत

कृतज्ञता ज्ञापन

'एकेडेमॉस' 2014 का यह 'विशेषांक' प्रकाशित करते समय अत्यंत हर्ष एवं उत्साह का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम प्राचार्या डॉ. मिनौती चैटर्जी का हृदय से आभार प्रकट करती हूं जिन्होंने अत्यंत व्यस्तता रहते हुए भी अपना अमूल्य समय देकर उत्साहवर्द्धन करने के साथ-साथ हमारा मार्गदर्शन भी किया। साथ ही नरेन्द्र कोहली जी, चित्रा मुद्गल जी, कविता भाटिया जी, निशा जी, राजेश जी, अर्चना जी, तृप्ता जी, रसाल जी, विभा जी, मंजु जी एवं सरोज जी को विशेष धन्यवाद देती हूं जिन्होंने सृजनात्मक एवं ज्ञानवर्द्धक लेख हमें प्रकाशन हेतु भेजे। अपने समस्त सहयोगी रचनाकारों के प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूं जिनके सहयोग के बिना प्रस्तुत संस्करण का संयोजन एवं प्रकाशन असम्भव था।